International Journal of HumanitiesAnd Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 50-51

महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी शिक्षिकाओं का योगदान

डॉ० अनिता कुर्रे [1], डॉ० पुष्पा तिवारी [2]
[1, 2] शासकीय दू० ब० म० स्ना० स्वशासी महाविद्यालय, कालीबाड़ी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
आज किसी भी समाज व देश के विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है समाज व देश के विकास में महिलाओं की योगदान को अनदेखा करना समाज व देश हित में सही नही कहा जा सकता। आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं के द्वारा महिलाओं का समूह बनाकर सरकार की योजनाओं का जानकारी दे रहे है तथा समूह में रहकार कार्य करने में मदद कर रहे है जिससे महिलाओं को सामाजिक व आर्थिक मजबूती मिल रहा है और जिससे महिलाये विकास कर रही है। इस शोध में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं (आं.म. शि.) की योगदान का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में छत्तीसगढ राज्य के धमतरी जिला के धमतरी विकासखण्ड के 100 महिलाओं का चयन कर उनके सामाजिक, आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं की योगदान का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि महिलाओं का सामाजिक आर्थिक विकास आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं के मेहनत, मार्गदर्शन व सहयोग से सरकार की योजनाओं का लाभ लेकर कर सामजिक, आर्थिक विकास पहले के अपेक्षा की है। अतः अध्ययन में पाया गया कि आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं द्वारा अपने कार्यो का निर्वाहन कर सरकार की योजनाओं को महिलाओं तक पहुंचा कर महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक विकास में अपना महत्वपर्ण योगदान दे रही है।

मूल शब्द : आंगनबाड़ी शिक्षिका, महिलाा, सामाजिक, आर्थिक, योगदान।

प्रस्तावना
प्राचीनकाल से लेकर स्वतंतत्रता के पचास वर्ष पुर्व तक महिलाओं की स्थिति में पुर्ण रूपेण सुधार नहीं हुआ। स्वतंत्रता के बाद हमारे देश में महिलाओं की स्थिति मे थोड़ा सुआर हुआ, आज महिलायें मजदूरी से लेकर शिक्षक, डाक्टर, नर्स, पुलिस, आर्मी, एयर होस्टेज, इंजीनियर, वैज्ञानिक सभी पदों पर आसिन होकर परिवार, समाज व देश का सम्मान बढ़ाने के साथ साथ आर्थिक विकास में मदद कर रही है। आज महिलायें परिवार समाज व कार्यस्थल के समस्याओं का सामना करते हुये अपनी जिम्मेदारियों का नर्वाह कर अपनी दोहरी भूमिका (परिवार व कार्यस्थल के प्रति उत्तरदायित्व) का प्रमाण प्रस्तुत कर रहीं है। महिलाओं द्वारा दोहरी भूमिका का निर्वाहन करना आज शोध का अति आवश्यक रूचिपुर्ण व समाज हित विषय है, महिलाओं की हिम्मत, दृढ़ता, परिश्रम पुरूषों से कम नहीं है इस शोध में छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला के धमतरी विकासखंड के महिलओं के सामाजिक, आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाओं द्वारा दिये गये योगदान का अध्ययन किया गया है। आंगनबाड़ी महिला शिक्षिकाएं अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाहन कर महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक विकास कर रही यही इस अध्ययन का विषय है।

शोध का विषय
महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी शिक्षिकाओं का योगदान।

उददेश
महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी शिक्षिकाओं के योगदान का अध्ययन करना।
1. महिलाओं के सामाजिक विकास का अध्ययन।
2. महिलाओं के आर्थिक विकास का अध्ययन।
3. आंगनबाड़ी शिक्षिकाओं का महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में दिये गये योगदान का अध्ययन।

शोध परिकल्पना
अध्ययन विषय को वैधता व वैज्ञानिकता प्रदान करने के लिये उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया ताकि अध्ययन को उचित दिशा निर्देश मिल सके।
1. महिलाओं का सामाजिक विकास हुआ होगा।
2. महिलाओं का आर्थिक विकास हुआ होगा।
3. आंगनबाड़ी शिक्षिकाओं का महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में योगदान होगा।

अध्ययन का क्षेत्र
रायपुर छत्तीसगढ़ राज्य का राजधानी है, धमतरी जिला राजधानी रायपुर से 78 कि. मी. की दूरी पर है। यहां का क्षेत्रफल 20.19 कि. मी. है। यहां की जनसंख्या 19,9,199 है, यहां की साक्षरता दर 78. 95 प्रतिशत है, लिंगानुपात 1000 पुरूष में 1012 महिला है। छत्तीसगढ के सबसे बड़ी नदी महानदी का उदगम यहीं से हुआ है धमतरी जिला के चार विकासखंड है जिसमें धमतरी, नगरी, कुरूद, मगरलोड है। धमतरी जिला के धमतरी विकासखंड के 100 महिलाओं का चयन विषय के रूप में किया गया है।

अनुसंधान विधि
न्यादर्श का चयन उपकरण तथ्यों का संकलन तथा तथ्यों का विश्लेषण है।

उत्तरदाताओं का चुनाव
धमतरी जिले में कुल 1100 सौ आंगनबाडी है जो कि शहरी, ग्रामीण दोनों है। धमतरी विकासखंड में 310 आंगनबाडी है इन्ही आंगनबाड़ी

के क्षेत्रों में रहने वाली 100 महिलाओं का चयन उत्तदाता के रूप में यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया।

तथ्यों का संकलन

प्राथमि स्त्रोत – इससे आशय साक्षात्कार प्रश्नवली अवलोकन विधि और उददेश्यपुर्ण निदर्शन से है।
द्वितीय स्त्रोत – विभिन्न पत्र पत्रिकाएं शोध पत्रिका शोध प्रबंध सरकारी प्रकाशन समाचार पत्र आदि से है।

विश्लेषण

दोनों स्त्रोतों से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण हेतु मानक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। गुणात्मक एवं मात्रात्मक आंकड़ो का सावधानी पुर्वक कम्प्यूटर द्वारा विश्लेषण किया गया।
तालिका – महिलाओं का सामाजिक विकास हुआ, महिलाओं का आर्थिक विकास हुआ, आंगनबाड़ी शिक्षिकाओं का महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में योगदान है। उत्तारदाताओं द्वारा स्वीकार या अस्वीकार किये गये विवरण को नीचे तालिका व ग्राफ के माध्यम से दर्शाया गया है।
तालिका व ग्राफ के द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका 1

	स्वीकार नहीं किये	स्वीकार किये	कुल योग
सामाजिक विकास	25	75	100
आर्थिक विकास	35	65	100
आं. बा. शिक्षिकाओं का योगदान	32	68	100

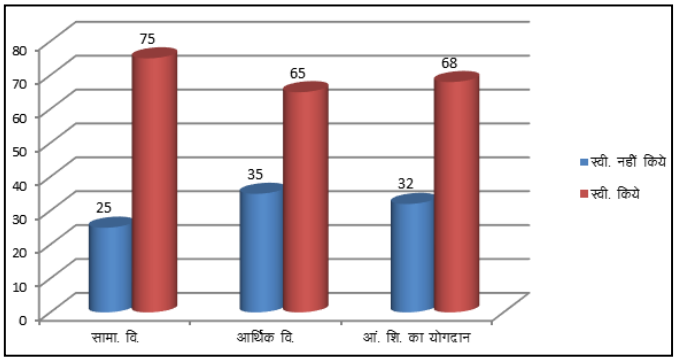

ग्राफ 2

तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 100 महिलाओं में सामाजिक विकास हुआ है स्वीकार करने वाली 75 है जिबकी सामाजिक विकास नहीं हुआ है स्वीकार करने वाली महिलाएं 25 है इसी तरह आर्थिक विकास हुआ है को स्वीकार करने वाली 65 है जबकी आर्थिक विकास नहीं हुआ है स्वीकार करने वाली महिलाएं 35 है सभी महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक विकास में आंगनबाड़ी शिक्षिकाओं का योगदान है स्वीकार करने वाली महिलाओं में 68 जबकि योगदान नहीं है स्वीकार करने वाली महिलाएं 32 है।

निष्कर्ष

कार्यस्थल का समस्या – वेतन कम मिलना है, समय अधिक लगता है, घर घर जाकर बच्चों को लाना भी होता है, छूटटी कम होना, शौच का व्यवस्था न होना, पानी का व्यवस्था न होना, बिजली का व्यवस्था न होना, आने जाने का साधन का अभाव होना, कार्यस्थल पर लोगों का महत्व न देना अर्थात शिक्षक न समझना, लोगो द्वारा ताना देना, उच्च अधिकारियों का बाते सुनना, आफिस कार्य के लिये अधिकतर विकासखंड व जिला मुख्यालय का चक्कर लगाना, बच्चों को आंगनबाडी में पढ़ाना, इन सभी कार्यो को करने के बाद भी सरकार की योजनाओं को घर घर पहुंचाना ताकि समाज में रहने वाली महिलाओं का पुर्ण रूप से सामाजिक व आर्थिक विकास हो सके। अपनी जिम्मेदारी का निर्वाहन करते हुये सरकार की महिलाओं व महिला समूह से संबधित योजनाओं को महिलाओं तक पहुचाने की काम करती है इसलिये महिलाओं ने सामाजिक व आर्थिक विकास होना स्वीकार किये साथ ही साथ अपने विकास में आंगनबाड़ी शिक्षिकाओं के योगदान को भी स्वीकार किये। इस अध्ययन के निष्कर्ष में परिकल्पनाओं को सही होना पाया गया।

संदर्भ

1. देसाई मीरा, वूमेन इन माडर्न इंडिया कंपनी पं. ला. लि. मुम्बई, 1957 .
2. अली अेगतरे, वूमेन ऑफ इंडिया, चॉद कार्पो,प्रा. लि. न्यू दिल्ली, 1958 .
3. सत्य दूबे मिश्रा, मनु की समाज व्यवस्था, किताब महल, प्रथम संस्करण, कलकत्ता, 1964 .
4. कपूर प्रमिला, भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएं, राजमहल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975 .
5. एकीकृत बचपन विकास सेवाएं योजना, शिक्षा और समाज कल्याण, भारत सरकार के समाज कल्याण मत्रालय विभाग, भारत, नई दिल्ली,1976 .
6. खन्ना गिरजा, इंडिया वूमेन, टूटे विकास पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 1978 .
7. आहूजा राम, राइटस ऑफ वूमेन ए फेमिनिष्ट पर्सपेक्टिव, राजत पब्लिशर्स, जयपुर, नई दिल्ली, 1992 .
8. कपाडिया के. एम., मैरिज एंड फैमिली इन इंडिया, नेशनल पब्लिशर्स हाउस, जयपुर, 2000 .
9. भूषण केयर, छत्तीसगढ के नारी रत्न, जन चेतना प्रकाशन, सुंदर नगर, रायपुर, 2002 .
10. पॉल, डी .आई. सी. डी. एस. के., साधारणीकरण की ओर भारतीय, जम्मु समुदाय मेड, 2003 .
11. हैस ए., सैंडर्स डी. और लीमैन, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के संभावित योगदान, लैंसेट, 2007 .
12. गुप्ता सुभाषचंद्र, कार्यशील महिलाएं एवं भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009 .
13. कुबेड म. वि., भारत में महिला शिक्षा, शैक्षिक संवाद की पत्रिका, अप्रैल, 2010 .
14. पूणिया पिंकी, महिला अधिकार बनाम मानवाधिकार, योजना अंक 4, अप्रैल, 2011 .
15. गोठ के अंगना, महिला एवं बाल विकास विभाग, त्रैमासिक पत्रिका, अंक 5 मार्च, 2011.